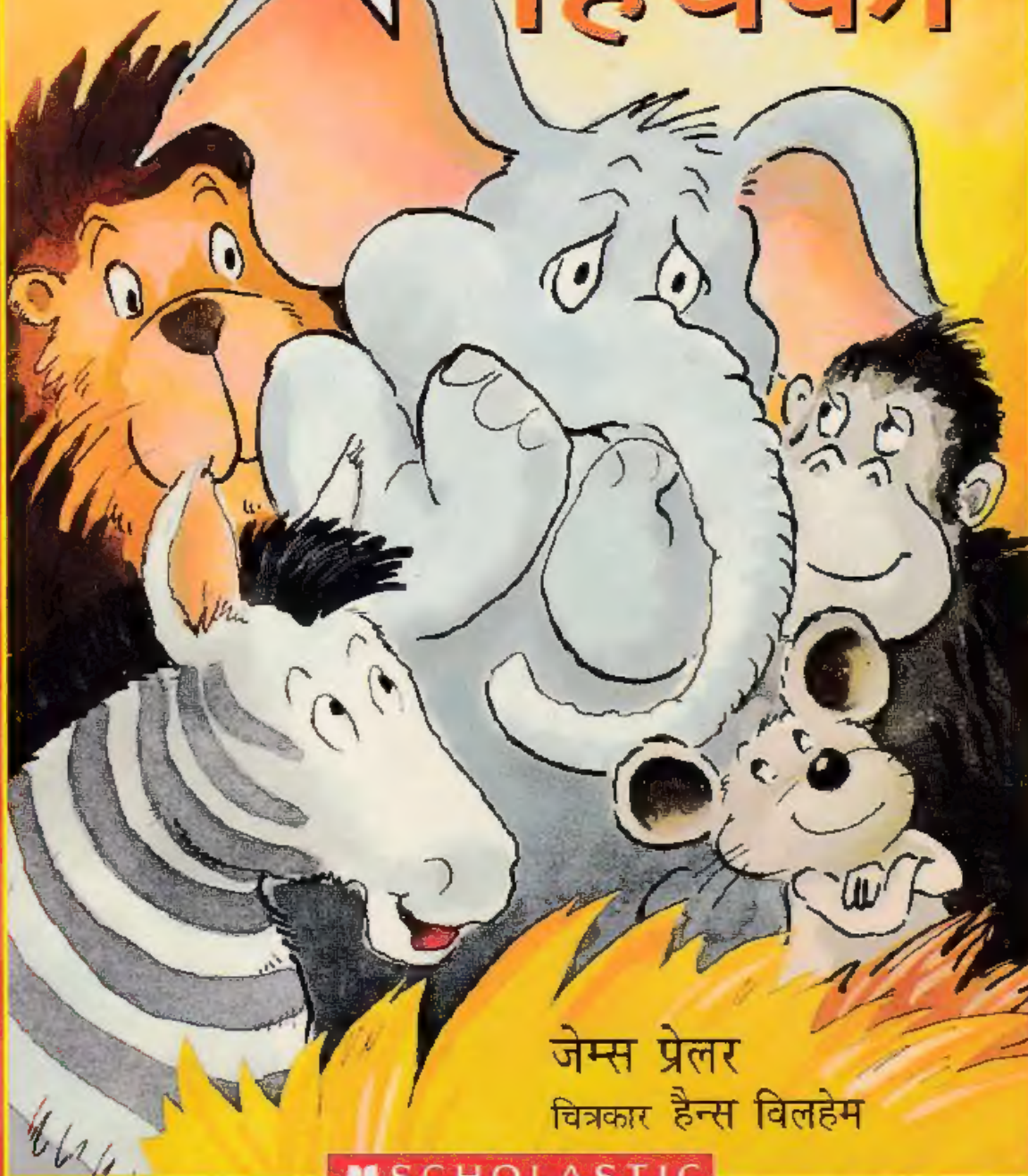




की हिचकी



जेम्स प्रेतर

चित्रकार हैन्स विलहेम

 SCHOLASTIC

हाथी की हिचकी



हाथी की हिचकी

लेखक: जेम्स प्रेलर

चित्रांकन: हैन्स विल्हेम

अनुवाद: पूर्वा वर्मा

जून 2007 / 3000 प्रतियाँ

80 ग्राम मेपलिथो एवं 250 ग्राम कोटेड बोर्ड (कवर) पर प्रकाशित

यह संस्करण, पराग इनिशिएटिव, सर रतन टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित

मूल्य: 30.00 रुपए

ISBN-10 81-7655-674-2

ISBN-13 978-81-7655-674-3

एकलव्य के लिए स्कॉलास्टिक द्वारा प्रकाशित

सम्पर्क: एकलव्य

ई-7/एचआईजी 453, अरेरा कॉलोनी

भोपाल-462 016 म.प्र.

फोन: (0755) 246 3380

फैक्स: (0755) 246 1703

www.eklavya.in

सम्पादकीय: book@eklavya.in

किताबें मँगवाने के लिए: pitara@eklavya.in

No part of this publication may be reproduced, or stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording, or otherwise, without written permission of the publisher. For information regarding permission, write to Scholastic Inc., Attention: Permissions Department, 557 Broadway, New York, NY 10012.

Text copyright © 1994 by James Preller.

Illustrations copyright © 1994 by Hans Wilhelm Inc.

Activities copyright © 2003 Scholastic Inc.

SCHOLASTIC, CARTWHEEL BOOKS, and associated logos are trademarks and/or registered trademarks of Scholastic Inc.

All rights reserved.

Original English edition published in November 1994 by Scholastic Inc.

This Hindi edition published in June 2007 by Scholastic India Pvt. Ltd.,
Golf View Corporate Tower-A, Third Floor, DLF Phase-V, Gurgaon 122 002

Hindi translation © Scholastic India Pvt. Ltd.

हाथी की हिचकी



जेम्स प्रेलर
चित्रांकन हैन्स विलहेम
अनुवाद पूर्वा वर्मा



एकलव्य के लिए
स्कॉलास्टिक द्वारा प्रकाशित



सोने का समय हो गया था ।
सभी जानवर गहरी नींद सो
रहे थे ।



सिर्फ हाथी को छोड़कर।
उसे हिचकी आ रही थी।





चिम्पैंजी जाग गया ।

“मैं जानता हूँ तुम्हारी हिचकी का इलाज,”

उसने कहा।

“सिर पर खड़े हो जाओ और

एक केला खाओ।”





हाथी ने वैसा ही किया ।



धड़ाम्!
उसे चक्कर आ गया।



हिक्! हिक्!



शेर जाग गया ।



“मैं बताऊँ क्या करना है?”

उसने कहा।

“ढेर सारा पानी पी जाओ,
गटागट।”





हाथी ने वैसा ही किया ।



उसने पानी पिया
और पिया
और पिया
और पिया ।



हिक्! हिक्!



जेबरा जाग गया ।





“अभी ठीक करता हूँ तुम्हारी हिचकी,”

जेबरा बोला।

“साँस रोको और दस से पीछे की

गिनती करो।”



हाथी ने वैसा ही किया ।

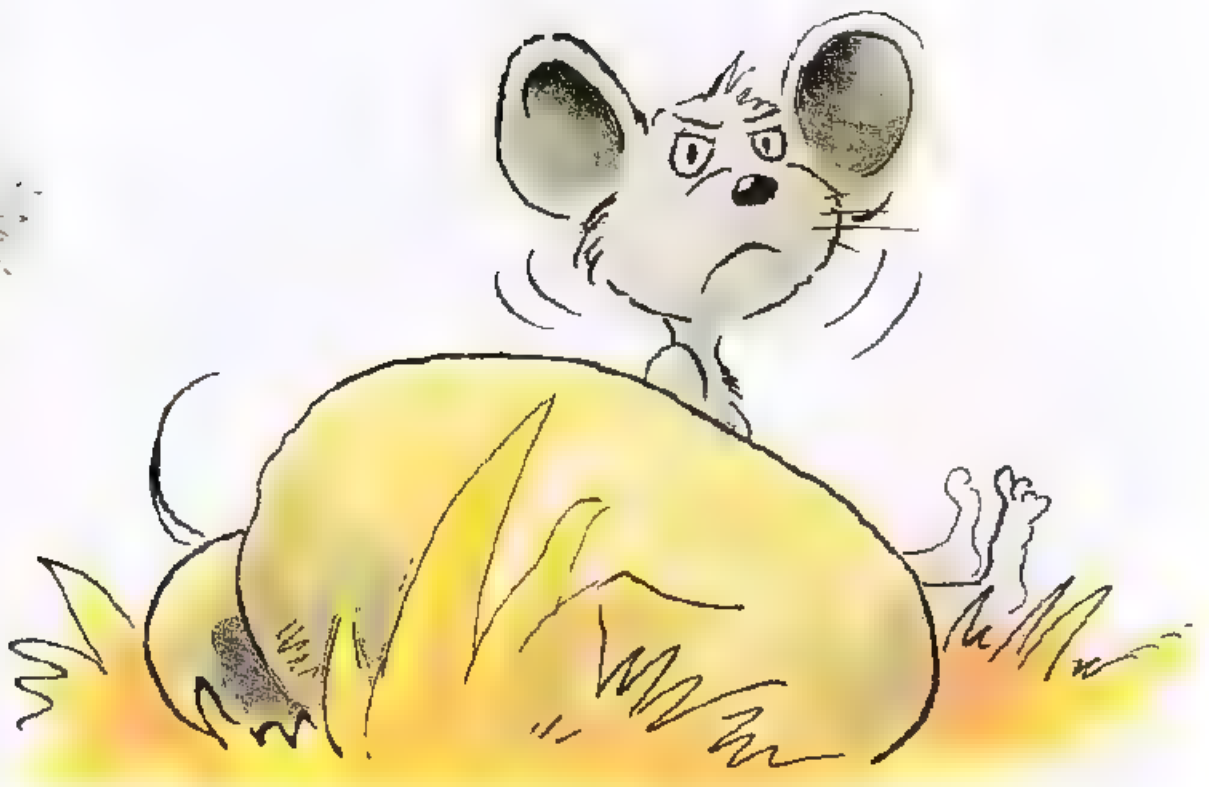


10... 9... 8... 7... 6... 5... 4... 3... 2... 1...





चूहा जाग गया ।



“यह कैसी आवाज़ है?”

उसने पूछा ।

“मुझे सोना है ।”





“बेचारे हाथी को हिचकी
आ रही है,”
चिम्पेंजी ने कहा।

चूहे ने हाथी की आँखों में देखा
और चिल्लाया, “बू... बू... बू...”





सब देखते ही रह गए।

और हिचकियों की आवाज़ रुक गई!

“इससे हमेशा हिचकी रुकती है,”
चूहे ने कहा।





सब जानवर फिर से सो गए।

सिर्फ हाथी को छोड़कर...

आच्-छी!





हाथी को हिचकी आ रही है
और रुक ही नहीं रही!
कौन बताएगा इसका उपाय?



एकलव्य के लिए स्कॉलैस्टिक द्वारा प्रकाशित

मूल्य 30.00 रुपये

ISBN-10 81-7655-674-2

ISBN-13 978-817655-674-3



9 788176 558743